पीड़ित चेहरों का मर्म

मानिक बच्छावत

समकालीन सृजन
20, बालमुकुन्द मक्कर रोड
कलकत्ता–700 007

प्रकाशन : समकालीन सृजन
20, बालमुकुन्द मक्कर रोड,
कलकत्ता–700 007

सर्वाधिकार : मानिक बच्छावत
प्रथम संस्करण : 1994
आवरण : श्रीकांत गोड़

वितरक : वाणी प्रकाशन
4697/5, 21ए, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002

मुद्रक : श्री लेजर
18, पांचू धोपानी लेन, कलकत्ता–700 007

मूल्य : 50.00

PEEDIT CHEHRON KA MARM

by Manik Bacchawat

श्रद्धेय बड़े भैया को

क्रम

पीड़ित चेहरों का मर्म

चेहरे पीड़ित हैं
बुझे
घिसे और
पिसे हुए

वे चुप हैं
बोलना चाहते हैं
बोल नहीं पाते
फड़फड़ाते हैं
फिर स्तब्ध हो जाते हैं

हताशा से भरे हुए हैं
इधर–उधर गिरे हुए–पड़े हुए
उन्हें ढूंढ़ कर
तैयार करना होगा
शब्द देना होगा
आखिर कब तक
सोए रहेंगे वे

खोए रहेंगे वे
एक दिन उन्हें उठना होगा

उस दिन
चेहरे कविता की प्रतीक्षा नहीं करेंगे
किसी नाद की
आह्वान की अपेक्षा नहीं करेंगे
वे सीधे हमलावर होंगे
अपने चेहरों से
झीना पर्दा उतार फेंकेंगे
बोलेंगे जोर–जोर से
चिल्लाकर बोलेंगे
अचानक घायल हुए सिंहों की तरह
अपनी पीड़ा का
मर्म खोलेंगे
जोर–जोर से बोलेंगे ।

खबर

बहुत दिनों बाद
मुझे कुछ नए धक्के लगे
झकझोर दिया गया मैं
ऊपर से नीचे तक
किसी भूकंप की तरह

मैं निःशब्द हूं निहत्था
कानों में कीलें ठोक दी गई हैं
मुंह पर ताले हैं
मैं कुछ नहीं कह पाऊंगा
ओठों की बुदबुदाहट के सिवाय

इतिहासकारो !
इस शताब्दी का
सिर्फ मुर्दा वृत्तांत
लिखने के लिए अभिशप्त हो तुम
सिर्फ सिद्ध करने में लगे रहो कि
वहां रामजन्म भूमि थी
या बाबरी मस्जिद
और तुम्हें

वहस में छोड़कर
हादसा
सब कुछ निश्छिद्र कर देगा

हमारे कुछ पत्रकार अभी
बम विस्फोट, हत्या, बलात्कार और
राजनैतिक अंतःपुर के
सनसनीखेज समाचारों की
खोज में जा रहे हैं
समाचार कविता में
कवड्डी खेल रहे हैं

मेरे कवि बंधुओ !
क्षमा करना
कविता खवर की खवर है
जहां हर चिह्न मिटा दिया जाता है
वहां भी कविता
एक नया इतिहास रच देती है !

वे अब भी हैं

उठकर चलें वहां
जहां वे अब भी हैं
मौजूद
सुखों से दूर दुखों के पास

कमजोर की
अंगुलियां पकड़े हुए–
वे ढकेलते नहीं
लोगों को सीने से लगाते हैं
उनके लिए खोलते हैं
जीवन का नया द्वार
चुपचाप करते हैं
ढेर सारे भले काम

वे नहीं होते
अखबारों की सुर्खियों में
वे नहीं देते
भाषण सभा मंचों से
पुरस्कार की पंक्ति में भी
नहीं हैं वे खड़े
वे होते हैं
दुखी जनों के इर्दगिर्द
वे छिपे हुए होते हैं ।

दुखांत क्षणों में

कभी–कभी आता है
तमाम दुखों के बीच
सुख का एक क्षण
तब लगता है
मुझसे सुखी दूसरा कोई नहीं

मेरा यह छोटा–सा सुख
आरंभ करता है
अपने महान दुखों की यात्रा
लगता है यह मेरे दुखी होने का
पहला प्रभात है

मेरे तमाम दुखों के किसी कोने में
रिसता रहा है आज तक
यह छोटा–सा अकेला सुख
लड़ता रहा
बाहर आने के लिए
उगने
फलने–फूलने–फैलने के लिए

सुख निकल नहीं पाया

दुखों की माया नगरी से
उग नहीं पाया किसी
नील कमल की तरह
लबालब अंधेरे कीचड़ में

फिर भी मैं
बराबर इसी सोच में हूं कि
दुखांत क्षणों में
भी तो ऐसा होगा
कि सुख का कोई अंकुर
फिर जन्म लेगा
शुरू करेगा एक नई यात्रा
दुखों से रुबरू होकर।

जो हो रहा है

हम हँसते हुए मिलते
प्यार से बातें करते
लोगों के भीतर पहुंचते
लोग हमारे भीतर आते
शायद तब वह सब नहीं होता
जो हो रहा है

जो ऊपर से हँसते दिखते हैं
वे भीतर से रो रहे हैं
जो ऊपर से रोते दिखते हैं
वे भीतर से अट्टहास कर रहे हैं

हमने कपट ओढ़ रखा है
अपने इर्द –गिर्द
खड़ी कर ली हैं
संदेह की दीवारें
उगा ली हैं
घृणा की फसलें
जब वे पक रही हैं
कोई गौरय्या भी नहीं है आसपास।

हकीकत

मैंने
जमीन को छुआ
मुझे लगा
जमीन बहुत सख्त है
मैंने अपने पांव
हाथी जैसे कर लिए
और चलने लगा

चलते–चलते
मैंने महसूस किया
जमीन बहुत
हल्की हो चुकी है

मैंने अपने आपको
चींटी जैसा बना लिया
और चलने लगा

मुझे लगा
जमीन
उस बहुत बड़े आसमान के पास है
मैंने पैरों को

गरुड़ के पंख–सा फैला लिया
और उड़ने लगा

पहली बार
मैंने जाना
जमीन और आसमान
कभी मिल नहीं सकते
ठीक वैसे ही
जैसे हाथी और चींटी में कोई
मेल नहीं है
दोस्तो !
जिंदगी एक हकीकत है
कोई हँसी–खेल नहीं है ।

तब्दीली

कुछ लोग
खंडहरों में
तब्दील होते दिखे
कल कुछ थे
अब कुछ और होते दिखे
न पहले जैसी जीवंतता
न खुलापन
अब वे डरे हुए दिखे
अब वे सहमे हुए दिखे
मन में जो है
बाहर नहीं आता
बाहर जो है
भीतर नहीं जाता

कभी सबसे अलग हुआ करते थे
अब किसी न किसी के
पीछे खड़े हुए दिखे
कुर्सी के खिलाफ लड़ते हुए वे
बड़े मजे से
कुर्सी में गड़े हुए दिखे।

गुदे हुए हाथ

वह मर गया
बस के नीचे दब कर
घर लौटते हुए
कोई आवाज नहीं उठी
न रोना–धोना
बचकर निकलते लोग
रास्ते चलते लोग
उसकी पहचान पर
एक फौरी नजर फेंकते हुए

तब तक एक और बस गुजरी
लारियां–कारें दौड़ती रहीं
तितर–बितर होकर
बिखर गया वह आदमी
अपनी पहचान का
एक–एक कतरा लुटाते हुए

दौड़ी–दौड़ी उसकी मां आई
उसने उठाया
सिर्फ उसका कटा हुआ हाथ
जिस पर
कभी मेले में
उसका नाम गुदाया था उसने
आदमी चला गया
उसकी मां के हाथ में रह गया
सिर्फ कटा हुआ हाथ ।

घड़ियाल

कई जिम्मेदार थे
उन लोगों की मौत के
जो अपनी मौत नहीं मरे

मार दिए जाने के बाद
उन्हें जोर–जोर से याद किया गया
ताकि लोग पूछ न बैठें
वे किनके शिकार थे

अतः
हत्यारों ने
अपनी गर्दनें ऊंची कीं
जोर–जोर से बेतहाशा रोने लगे

डरे हुए थे
मारे जानेवालों के बच्चे ।

बोझ

यदि मुझे चूहा बनकर ही
जीना हो
किसी बड़े कृषिफार्म में जीऊं
या किसी बगीचे की खुली हवा में
ताकि मुझे
ताजा हवा और फूलों की गंध मिले

किसी गृहस्थ के घर में
उसके ढके–खुले बर्तनों से
अनाज चुराकर खाना
अब
बोझ बनता जा रहा है ।

सच कहने का यही सही वक्त है

वे
जिसे चाहें छोटा कर दें
जिसे चाहें बड़ा
उनके मिजाज का ठिकाना नहीं

जिसे चाहें
पैरों तले रौंद दें
जिसे चाहें
माथे पर उठा लें
गिरगिट की तरह
रंग बदलते हैं वे
लहरों पर फेन की तरह
खूब बहते हैं वे
और यह सब अब
बहुत खतरनाक हो चुका है

झुंडों से अब लोगों को
बचकर चलना होगा।
न मालूम नजर उठने भर से
वे कौन—सा रूप धारण कर लें

वर्षों की यह यात्रा
क्षणों में
तोड़ दें जोड़ दें
गंगा नहाने के लिए
जा रहे पैरों को
किसी आदिम हिंसा से

वे बौखलाए हुए हैं
हमारी और आपकी ओर ही
बढ़ रहे हैं
हर आदमी को निगलने के लिए
झुंड ही झुंड
सच कहना मुश्किल है
बच रहना मुश्किल है
सिर उठाकर
सच कहने का यही सही वक्त है ।

कुत्ता–टहल

शाम को
निकले हैं बाबुओं के नौकर
आयाएं
कुछ हाथों में पकड़े
कुत्ते की जंजीर
कुछ गोद में लिए
मालिकों के बच्चे

पार्क में बैठे हैं
एक–दूसरे के करीब
बतियाते
अपने बच्चों के बारे में
जिन्हें वे
दूर गाँवों में छोड़ आए हैं

कुत्ते टहल रहे हैं
आसपास सूंघते हुए
कोई जानी–पहचानी गंध
वे दूध, डबल रोटी और बिस्कुट् खाकर
आए थे टहलने

कुछ मांसाहारी कुत्ते भी थे
बाघ की तरह तेज
कीमती कुत्ते

पार्क से लौट कर वे
अपने--अपने मालिकों के घर जाएंगे
रात को फिर इकट्ठे होंगे
लेकर अपनी अपनी रोटियां
दो दिनों की बासी सब्जियां
कुत्ते के घर के बाहर
पसर कर सो रहेंगे
सुबह उठना है
कुत्तों की नींद टूटने से पहले ही
सुबह उन्हें कुत्तों को लेकर
फिर पार्क जाना है।

सूखा

सूखा है
सब कुछ सूख गया है
यहां
चरमरा रही हैं खेजड़ियां
पेड़ों की रूह कांप रही है
किसी बूढ़े रोगी की झुकी कमर–सी
लटक गई हैं डालें
न जाने कब टूट गिरें
चर् चर् करतीं

फट गई है जमीन
जगह–जगह
जैसे बुभुक्षु केओठों की
पपड़ियां
धूल के गुबार में
सब कुछ रूखा, धुंधला और वीरान
मटके नहीं डबडबाते
कुओं–बावड़ियों में
नदी नंगी है
उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं

भाग रहे हैं ढाणियों–गांवों से
लोग प्यास से जलते

यह भी जुलूस है
आदमी, औरतें, बच्चे
बिना नारों के
सन्नाटे में गुजरते हुए
नेताओं के बंगलों की ओर
राहत के लिए

उन्हें घर, भांडे, मवेशी गिरवी न रखने पड़े
उन्हें औलाद न बेचनी पड़े
उन्हें बंधुआ मजदूर न बनना पड़े
वे निकल पड़े हैं
पेट भर अन्न और पानी के लिए
लेकिन जमीन इतनी सख्त है
कि उनके पैरों के निशान
गायब होते जा रहे हैं ।

गर्जन–तर्जन

बहुत जोर से
बोले थे तुम
गरजे थे तुम
बरसे थे तुम

फिर
तुम रुके
तुमने देखा
जहां खड़े थे तुम
वहीं खड़े थे तुम
कहीं कुछ नहीं हुआ
तुम्हारी बातों ने
किसी को नहीं छुआ ।

शुरुआत

शब्द
छपने दो
छप–छप कर
खपने दो
जिस दिन नहीं बचेंगे
शब्द
उस दिन शुरू करूंगा कहना।

बुरा समय

बुरा समय है दोस्त
मिलकर समय काटो
कुछ दे नहीं सकते और
तो
खुलकर हँसो
सिर्फ प्यार बांटो ।

ठंडी आलमारी

उन्होंने खरीद ली है
ठंडी आलमारी
बूढ़े–बच्चे खुश
खूब खाने को मिलेगी बरफ
जब चाहेंगे निकालकर
पिएंगे ठंडा पेय
और सारा सामान
सुरक्षित अलग से

सिर्फ उदास है
घर की मेहरिन
अब उसे कुछ भी
बचा–खुचा नहीं मिलेगा
खाने को ।

शरणदाता

हिरणी
जंगल में दौड़ी
उसके पीछे
चार भेड़िए भी दौड़े
वह दौड़ती रही ताबड़तोड़
भेड़िए पीछा करते रहे

आखिर हिरणी ने
एक गुफा देखी
सोचा
मैं उसमें छिप जाऊंगी
अपनी जान बचाऊंगी
घुस गई उसमें
वहां चार दूसरे भेड़िए
पहले से बैठे थे।

कौवे

कौवों को देखकर
मुंह न फेरो
वे भी खूबसूरत होते हैं

उनकी कांव–कांव में
एक गरमाहट भरी भाषा है
वे शोर करते हैं
अपनी बिरादरी को
आवाज देते हैं
जो भी मिलता है
अकेले नहीं खाते
किसी के भी मरने पर
मिलकर शोक मनाते हैं
गाते हैं
अल्ल सुवह नया तराना
वे उन्मुक्त कौवे हैं
और हम कैद तोते ।

चिड़िया का संगीत

पेड़ की शाखाओं पर
फुदक रही थी
पीले–नीले–हरे रंगवाली
नन्हीं चिड़िया

गा रही थी
चहचहा रही थी
अजीब रसीली थी उसकी तान
हम तन्मय होकर
सुन रहे थे उसे
मुग्ध होकर
देख रहे थे उसे
सन्नाटे में उसकी आवाज
अमजद अली खां के सरोद–सी
मीठी थी

इतने में गुजरा
जींस पहनी लड़कियों का एक झुंड
पेड़ के पास रुक गया
वे गूंज रही थीं

कौवे

कौवों को देखकर
मुंह न फेरो
वे भी खूबसूरत होते हैं

उनकी कांव–कांव में
एक गरमाहट भरी भाषा है
वे शोर करते हैं
अपनी विरादरी को
आवाज देते हैं
जो भी मिलता है
अकेले नहीं खाते
किसी के भी मरने पर
मिलकर शोक़ मनाते हैं
गाते हैं
अल्ल सुबह नया तराना
वे उन्मुक्त कौवे हैं
और हम कैद तोते ।

चिड़िया का संगीत

पेड़ की शाखाओं पर
फुदक रही थी
पीले–नीले–हरे रंगवाली
नन्हीं चिड़िया

गा रही थी
चहचहा रही थी
अजीब रसीली थी उसकी तान
हम तन्मय होकर
सुन रहे थे उसे
मुग्ध होकर
देख रहे थे उसे
सन्नाटे.में उसकी आवाज
अमजद अली खां के सरोद–सी
मीठी थी

इतने में गुजरा
जींस पहनी लड़कियों का एक झुंड
पेड़ के पास रुक गया
वे गूंज रही थीं

किसी पॉप संगीत की तरह
संभवतः माइकल जैक्सन पर
कर रही थीं चर्चा
वे जोर–जोर से बोल रही थीं
चिड़िया
उनका शोर सुनकर
उड़ गई

चल पड़े दुखी होकर हम
चिड़िया का संगीत
चिड़िया के
साथ चला गया
हम
अकेले रह गए।

हवा

हवा बहुत
बेशर्म है
उसे किसी का डर नहीं

वह पेड़ों–पत्तों–फूलों और
वनस्पतियों को
चूमती है
नदियों–पोखरों–पहाड़ों को
गले लगाती है
उनके साथ अठखेलियां करती है
उसे कोई शर्म नहीं

उसे नंगी होने
नहाने
कुछ पहनने–ओढ़ने की
कोई फिक्र नहीं
वह लोक के
इस छोर से
उस छोर तक
उड़ जाती है
वह सर्द होती है
गर्म होती है
उसकी चपेट में जो आ जाए

उसे उकसाती है
जो मिल जाए
उसे दुलारती है
हवा
आग लगाती है
आग बुझाती है

हवा को किसी का डर नहीं
सब हवा से डरते हैं
वह वर देती है
त्राण देती है
वह शाप देती है
प्राण हरती है
सब हवा से प्यार करते हैं
सब हवा से डरते हैं

हवा के कारण
लोग जीते हैं
लोग मरते हैं
लोग
हवा का रुख देखकर
कदम रखते हैं
हवा गुलाम नहीं
वह जन्मजात स्वतंत्र है
हवा बहुत बेशर्म है
उसे
किसी का डर नहीं ।

पैदाइश

ऐसा तो नहीं कि
हम मलवे पर जन्मे हों या
आसमान से टपके हों
किसी ने बीज डाले हों
और हम न उगे हों

फिर न होने का अहसास
क्यों जिंदा है।

जीत

वे जो मुड़ न सके
वे जो झुक न सके
वे जो लड़ न सके
हार गए

वे जो मुड़ गए
झुक गए
हारे हुए
वे बाजी मार गए।

मौत

मरूंगा नहीं अभी
कभी
आएगी मौत तो लड़ूंगा
उसके सीने पर चढ़ूंगा
उसे धर दबोचूंगा

तब वह
छटपटाएगी
मुझे मारने के पहले
स्वयं ही मर जाएगी।

पहचान

सब कुछ हरा–भरा है

पत्तों पर वही रंग है
खेतों में वही हरियाली है
सोतों में पानी
नदियों में बहाव

फिर नहीं मालूम
पहचान क्यों
सूखती जा रही है ।

यथार्थ

कबूतर
जो दोनों हाथों से
पकड़ कर
उड़ाए गए ऊपर
उड़े नहीं
फिर बैठ गए
मुंडेरों पर

दाना देखते ही
लौट आए
नीचे जमीन पर
जितनी बार उड़ाए गए
उतनी बार लौट आए।

मन

प्यार में
डूबा हुआ मन
लाख रोका
रुका नहीं
प्रमत्त होता गया
तन आखिर
होता गया मन।

समानांतर

नदी के पास
बहती हवा
कहती हवा
थोड़ा थमो

पहाड़ों पर
खड़े पेड़
अड़े पेड़
कहें चलो ।

भरी नदी

एक नदी है
जिसके दो हिस्से हैं
उन दो हिस्सों के
दो किस्से हैं

एक में प्रेमी
डूब मरा था
दूसरे में प्रेमिका
डूब मरी थी

नदी अपनी सतह तक
भरी की भरी थी।

पेरिस की बत्तखें

बर्फीली हवा
चल रही है
झरने लगे हैं
पेड़ों से पत्ते
उड़–उड़कर
पेरिस की झील के किनारे

पेड़
हो गए हैं उदास
राह चलते लोग भी

झील ने
बंद कर दिया है बहना
वह नीली से सफेद हो चुकी है
कोई हलचल नहीं
बर्फ की बेजान सड़क पर
फंसी हैं कुछ नावें
सूखी पत्तियां
और मरी हुई बत्तखें

बर्फ ने झील को ठेलकर

एक छोटा सरोवर बना दिया है
जहां आ चुकी हैं
सभी बची हुई बतखें
तैरती हुई
गाती हुई
तोड़ती हुई
बर्फ की झीनी चादर
जिसे बर्फीली हवा
लगातार सख्त बना रही है ।

घासवनों में

नदी किनारे
दूर–दूर तक
ऊँची–नीची
लंबी–छोटी
घास उगी है
आपस में
गलबाहें डाले
झूम उठे हैं
ये मतवाले
घास वनों में

आए छिपकर
प्रेमी दिन में
बातें करते
गाते मन में
आग तनों में

डाँगर चरते
आसपास में
हलवाहे भी
लगे चास में
आस जगी है
घास उगी है
घास वनों में '

तालाब के फूल

जल में उगे फूलों को
जल नहीं डुबाता
उनसे होकर
सनसनाती हवा उनसे खेलती है
फूल हवा में पेंगें भरते हैं
इतराते हैं
तालाव के खुले जल में

फूल खिले हैं
अधखिले हैं
ताजा हैं
और रंगों से भरे हैं
तालाव की मछलियां
उन्हें छेड़ती हैं
छप्--छप् करतीं
तालाब के खुले जल में

फूल बने हुए हैं
सुंदर गलीचे
नीले आसमान के नीचे
धूप में
हमें बुलाते हैं अपने पास
प्यार देने के लिए
तालाव के खुले जल में।

भागते हुए जंगल

जंगल मुझे अच्छे लगते हैं
जहा तक कोई रास्ता
नहीं जाता
कोई पगडंडी नहीं गुजरती
उनसे होकर

जंगल मुझे अच्छे लगते हैं
जहां कोई वन्य अधिकारी
नहीं पहुंच पाया
शहरी कभी नहीं मुड़े उस ओर
पिकनिक पर

जंगल मुझे अच्छे लगते हैं
जहां दंगे नहीं घटते
नहीं कभी होता
वहां जोर का बम विस्फोट
वहां औरतें सुरक्षित हैं

जंगल मुझे अच्छे लगते हैं
जहां है प्रकृति का निर्मल संगीत
महानगर के लोकप्रिय संगीतकारों की

पकड़ से परे
और उस संगीत में खोए जहां—तहां
जंगलवासी मनुष्य

मैं कामना करता हूं
जंगल जिंदा रहें
पक्षियों और पशुओं के साथ
आकाश का काला कंबल ओढ़कर
ढंक लें अपने को ये जंगल ताकि
नहीं पहुंच सकें वहां सभ्य शहरी

मुझे जंगल डरे हुए लगते हैं
दनदनाती जीपों ने घेर लिया है उन्हें
वे दौड़ नहीं सकते
दहशत में हैं
भागते हुए जंगल।

पीढ़ियां

अब भी रोज
चढ़ता है
वह
सौ–पचास सीढ़ियां
उसके साथ चल रही हैं
पांच–पांच पीढ़ियां
चढ़ नहीं
पा रहीं वे सीढ़ियां ।

नंगी मां

अब भी
नहाती है
नदी–कुओं–तालाबों पर
नंगी मां

दरिद्रता से
लाज का केंचुल हटाकर
अपने जरा से कपड़े फेंक
एकांत में
अपनी मैल धोने लगी मां

अपने पुत्रों से
आंख बचाकर
नंगी मां।

बढ़ते हुए बच्चे

सुबह होते ही
बच्चे
उछलते हुए
चढ़ जाते हैं स्कूल बस पर
शाम लौट आते हैं
मां के आंचल में
ताजा हो
चले जाते हैं पार्क
खेलकर लौट आते हैं घर
पिता के पहुंचने से पहले ।
पढ़ते हैं
साथ खाकर सो जाते हैं
घर, स्कूल, पार्क
मां के आंचल और
पिता की आंखों के सामने
बच्चे
चलते हैं थकते हैं रुकते हैं
बढ़ते हैं इसी तरह
बच्चे ।

उसकी हँसी

सर्कस में
विदूषक आया
तरह–तरह के
करिश्मे दिखाने लगा
उसके करतब देखकर
लोग हँसते रहे
लोटपोट होते रहे
पर वह अपाहिज बच्ची
टस से मस नहीं हुई

विदूषक ने गौर किया
अपने को और बिगाड़ा
उछाला–संभाला
वह उदास बैठी
सूनी आंखों से
विदूषक को
बस चुपचाप देखती रही

जब सफल न हुआ विदूषक
रो पड़ा
उसे रोते देख
बच्ची तालियां बजाकर
हँसने लगी
कहने लगी–आ ! हा !
विदूषक रो रहा है ।

घर

कभी नहीं बना घर
मिलते रहे
मकान
खोजता रहा घर ।

युद्ध

युद्ध
किसी को कुछ नहीं देता
सबका
सब कुछ ले लेता है

युद्ध
अंधा होता है
अंधे धृतराष्ट्र तक को
युद्ध लड़ना पड़ा
करना पड़ा
कृष्ण को छल
कितना मूर्खतापूर्ण है
आदमी का
दंभ भरना
औरों को मारना
स्वयं का मरना

युद्ध लड़ने के लिए
आदमी
बनाता रहा हथियार
आज तक
मालूम नहीं हो सका
किस तरह संधियां भी होती रहीं
हथियार भी बनते रहे

युद्ध
पल भर में

पति का साया नहीं बचता
जिसमें बच्चों के सिर से
हाथ उठ जाता है

युद्ध
जिसमें
ध्वस्त होती है मनुष्यता
नष्ट होती है
सभ्यता, संस्कृति और कला
जिसमें
इतिहास पर पुतती है कालिख

युद्ध
जिसने हमें दिए हिटलर–मुसोलिनी
जिसमें
राख हुआ हिरोशिमा–नागासाकी
तबाह हुई आधी दुनिया

युद्ध
जिसने
आजतक किसी को
खुशहाली नहीं दी
शांति नहीं दी
अमरता नहीं दी

युद्ध
किसी को कुछ नहीं देता
वह
सबको तबाह करता है
युद्ध का अर्थ है
महाविनाश !

रंगभेद

मानव भेड़ियों ने
उगाया है एक बीहड़ जंगल
काली आबादी के इर्दगिर्द
लगा दी है आग
जो अब धू धू
जल रही है
किसी वनाग्नि की तरह निकल रही है
लपटें
काले लोग
प्राण लेकर भाग रहे हैं
जानवरों की तरह

गोरी हुकूमत
कत्लेआम पर तुली है
उन्हें
काला रंग सांप की तरह
डंस रहा है
उन्हें नहीं है बर्दाश्त कि
काले

पति का साया नहीं बचता
जिसमें बच्चों के सिर से
हाथ उठ जाता है

युद्ध
जिसमें
ध्वस्त होती है मनुष्यता
नष्ट होती है
सभ्यता, संस्कृति और कला
जिसमें
इतिहास पर पुतती है कालिख

युद्ध
जिसने हमें दिए हिटलर–मुसोलिनी
जिसमें
राख हुआ हिरोशिमा–नागासाकी
तबाह हुई आधी दुनिया

युद्ध
जिसने
आजतक किसी को
खुशहाली नहीं दी
शांति नहीं दी
अमरता नहीं दी

युद्ध
किसी को कुछ नहीं देता
वह
सबको तबाह करता है
युद्ध का अर्थ है
महाविनाश !

रंगभेद

मानव भेड़ियों ने
उगाया है एक बीहड़ जंगल
काली आबादी के इर्दगिर्द
लगा दी है आग
जो अब धू धू
जल रही है
किसी वनाग्नि की तरह निकल रही है
लपटें
काले लोग
प्राण लेकर भाग रहे हैं
जानवरों की तरह

गोरी हुकूमत
कत्लेआम पर तुली है
उन्हें
काला रंग सांप की तरह
डंस रहा है
उन्हें नहीं है बर्दाश्त कि
काले

पति का साया नहीं बचता
जिसमें बच्चों के सिर से
हाथ उठ जाता है

युद्ध
जिसमें
ध्वस्त होती है मनुष्यता
नष्ट होती है
सभ्यता, संस्कृति और कला
जिसमें
इतिहास पर पुतती है कालिख

युद्ध
जिसने हमें दिए हिटलर–मुसोलिनी
जिसमें
राख हुआ हिरोशिमा–नागासाकी
तबाह हुई आधी दुनिया

युद्ध
जिसने
आजतक किसी को
खुशहाली नहीं दी
शांति नहीं दी
अमरता नहीं दी

युद्ध
किसी को कुछ नहीं देता
वह
सबको तबाह करता है
युद्ध का अर्थ है
महाविनाश !

उनका सफेद दामन छुएं
शहर गांव, बस्ती, मुहल्ले
जहां कहीं वे रहते हैं
कालों का प्रवेश निषेध है
वहां रंगभेद है।

हां, पिछले दरवाजों की
अर्गलियां सदैव खुली हैं
क्योंकि
चाहिए इन्हें सब्जियों के भाव
बिकने वाले गुलाम जो
इनके बंगलों, घरों, दफ्तरों और
बागानों में काम कर सकें
इन्हें साफ रख सकें
उनके लिए खदानों से
सोना खन सकें

गोरी नस्ल को अच्छी लगती हैं
बड़े–बड़े स्तनों वाली
काली औरतें
उनकी मांसल जंघाएं
और तांबे की रंगवाली
त्वचा
जिसे वे भोग सकें
और ऐसा करते वक्त
उनके शयन कक्षों की
सफेद चादरें

एक रात का आर्त्तनाद

उस रात
सब कुछ निस्तब्ध था
किसी मौत के सन्नाटे की तरह
पनाह पाए हुए लोग
शिविरों में सो रहे थे।
कोई सांस नहीं चल रही थी
न कोई शब्द था
जो बाहर आ रहा था

अचानक बूटों की गड़गड़ाहट और
हथियारों की आवाजें
आने लगीं
सहमे हुए लोग और भयातुर हो गए
गुमसुम हो गए
जब तक यह सोचें कि क्या हो रहा है
एक अंतहीन काफिला हत्यारों का
अंदर दाखिल हो गया
निहत्थे–निरीह लोग
छटपटाने लगे
एक–एक कर दम तोड़ने लगे

वहां फातिमा थी
नजमा थी, शहनाज थी
उनके होंठ कांपते थे, हिलते थे
नरभक्षी भेड़िये
अपना काम कर गए
सुबह जब पूछा गया
लोग फूट–फूट कर रो रहे थे
वे कुछ नहीं कह रहे थे
उनकी जुबान लुप्त हो गई थी
हिचकियां बंधी हुई थीं
एक भयंकर आर्त्तनाद था चारों तरफ

जातिहीन दर्द

अपने ही
मुल्क के हिस्सों में
जब-जब जाना हुआ
मेरा नाम एक जाति हो गई

मेरा ठाकुरों के बीच ठाकुर होना
अनिवार्य हो गया
कायस्थों में कायस्थ या भूमिहार, हरिजन
कुलीन ब्राह्मण या चमार !
और ऐसा नहीं हो सका जब-जब
मैं शक की निगाहों से देखा गया
मुझे हर जगह घूरा गया
राजनीति, शिक्षा, साहित्य, कला में
हर जगह नजर मेरी जाति पर थी
अब मेरी राष्ट्रीयता
एक प्रश्नवाचक चिह्न है और
आदमी बनकर
यहां कुछ भी हासिल करना असंभव है

जातिहीन मैं
कब तक
छिपाऊंगा अपने को
कब तक
अक्षुण्ण रख पाऊंगा अपना अस्तित्व
एक गूढ़ दर्द के साथ
वह जीवन पर्यंत
साथ चलेगा मेरे ।

मजहब

जब भी कोई
आधी रात
दरवाजा खटखटाता है
धड़कनें बढ़ जाती हैं

जब भी कोई
दौड़ता है सुबह
सेहत के लिए
पदचाप रोंगटे खड़े कर देते हैं

छूटते हैं पटाखें जब
होती जब अजान
बजते जब शंख
आवाजें दिल दहला देती हैं।

सपने देखने का जुर्म

मैं सपना देखने लगा हूं
देखता हूं
पूरे देश में अमन है
कहीं कोई झगड़ा नहीं
झंझट नहीं रगड़ा नहीं
छात्र मेहनत से पढ़ रहे हैं
परीक्षा में नकल नहीं होती
न्यायालय में न्याय मिल रहा है
विद्यालय में बच्चों का आसानी से प्रवेश हो जाता है
शिक्षक मेहनत से पढ़ा रहे हैं
अस्पताल में डाक्टर
हर मरीज की देखभाल में लगे हैं
नकली दवाएं दुकानों से हट गई हैं

नगरपालिका ने
शहर को स्वर्ग बना दिया है
गंदगी नदारद
हर नल में पूरा पानी है
हर जगह पार्क है, खुली हवा है, पूरी धूप है

राशन दुकानों पर बढ़िया अनाज है
गैस की कमी नहीं
रसोईघरों में किसी का दम नहीं घुटता
चीजों में मिलावट नहीं
विशुद्ध घी के पकवान अब
केवल साइनबोर्ड पर नहीं
थाली में भी हैं
पुलिस चौकियों में
अब सिपाही कैरमबोर्ड खेल रहे हैं
सभी उचक्के जैंटलमैन हो गए हैं
न कोई घोटाला
न कोई छानबीन
किसी मंत्री को इस्तीफा देने की
कोई जरूरत नहीं

किसी लड़की के ब्याह में
दहेज देने की जरूरत नहीं है
बहुएं जलायी नहीं जातीं
औरतों का बलात्कार नहीं होता
वे घर में कैद नहीं हैं
स्त्री और पुरुष बराबर हैं

सभी नेता जनता के सच्चे सेवक हो चुके हैं
वे ईमानदारी से चुनाव लड़ते हैं
अपने दल के लोगों को
बोगस वोट डालने नहीं देते
दूसरे दल के लोगों की भी सेवा करते हैं

न्याय के लिए जीते हैं न्याय के लिए मरते हैं
दंगा नहीं कराते
पैसे नहीं बनाते

राम जन्मभूमि–बाबरी मस्जिद के
विवादास्पद स्थल पर
कैंसर और एड्स का अस्पताल खुल गया है
वहां हिंदू–मुसलमान दोनों जाते हैं
सभी एक–दूसरे के धार्मिक उत्सवों में
शामिल होते हैं
धर्म और राजनीति की खिचड़ी जल गई है

दलितों को ब्राह्मण वोट दे रहे हैं
ब्राह्मणों को दलित वोट दे रहे हैं
अमीर एक तरफ
गरीब दूसरी तरफ
सामाजिक न्याय अब प्रहसन नहीं है
सभी लोगों ने अपने नाम से
जातिसूचक विशेषण हटा लिए हैं

सरकारी दफ्तरों में लोग समय पर आ रहे हैं
हर जगह काम हो रहा है
बैंकों में विश्वास लौट आया है
सरकार ने खरबों का विदेशी ऋण चुका दिया है
बाहर की गुलामी का अब कोई खतरा नहीं
अब हम गर्व से कह सकते हैं
मेरा भारत महान !

तभी आंख खुलती है

राशन दुकानों
गैस की कमी न
रसोईघरों में वि
चीजों में मिलाव
विशुद्ध घी के
केवल साइनबो
थाली में भी हैं
पुलिस चौकियो
अब सिपाही कै
सभी उचक्के जैंट
न कोई घोटाला
न कोई छानबीन
किसी मंत्री को इ
कोई जरूरत नहीं

किसी लड़की के
दहेज देने की जरू
बहुएं जलायी नहीं
औरतों का बलात्कार
वे घर में कैद नहीं हैं
स्त्री और पुरुष बराबर

सभी नेता जनता के सच्
वे ईमानदारी से चुनाव लड़
अपने दल के लोगों को
बोगस वोट डालने नहीं देते
दूसरे दल के लोगों को भी सेव

तुम आदमी हो

इसी में है
वह आदमी
खोजो उसे
निकालो उसे
झकझोरो उसे

भीतर घुसो
इसी में है वह
मथो उसे
टेरो उसे
हिलकोरो उसे

वह तन कर
खड़ा हो जाए
सहम जाएं
उसे छिपानेवाले
ललकारो उसे

इससे पहले कि
वह खो जाए
पकड़ो उसे

से बोलो उसे

सपना टूटता है
दरवाजे पर सिपाही आ खड़े होते हैं
कहते हैं
क्यों न आपको सपने देखने के जुर्म में
गिरफ्तार किया जाए
जो सपने आप देख रहे हैं
वे बहुत भयानक हैं
देश की रीतिनीति के विरुद्ध हैं
राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने वाले हैं
ये सपने !

तुम आदमी हो

इसी में है
वह आदमी
खोजो उसे
निकालो उसे
झकझोरो उसे

भीतर घुसो
इसी में है वह
मथो उसे
टेरो उसे
हिलकोरो उसे

वह तन कर
खड़ा हो जाए
सहम जाएं
उसे छिपानेवाले
ललकारो उसे

इससे पहले कि
वह खो जाए
पकड़ो उसे
खोलो उसे
जोर–जोर से वोलो उसे

तुम आदमी हो
इस शरीर में
तुम आदमी हो ।

दौड़ते रहो

दौड़ते रहो
जितनी दूर दौड़ सकते हो
चलते रहो
तुम्हें कहीं नहीं रुकना है
पीछे भी नहीं देखना है
दौड़ते रहो

तुम्हारे पास कुछ है
जो बहुत जरूरी है
उसे मुट्ठियों में
भींचकर दौड़ो
संभाल कर दौड़ते रहो
जितनी दूर दौड़ सकते हो

मुट्ठी वहीं खोलना
जहां मिले तुम्हें
रुकी हुई संतति
शापग्रस्त पीढ़ी
खोजती हुई कोई पगडंडी
तब खोल देना
अपने बूढ़े–थके हाथों की मुट्ठियां

अभी भींचे रहो
संभाले रहो
दौड़ते रहो
जितनी दूर दौड़ सकते हो
चलते रहो।

भोर का तारा

यह नीला आसमान है
और दूर कहीं उगा है
वह तारा
भोर होने में अभी देर है
तेजस्वी लग रहा है वह तारा

पूरब से छिटक रहा है उजाला
और नीला आसमान झिलमिलाने लगा है
सूर्य के स्वागत में
सूर्य निकलेगा
थोड़ी देर में पूरा आसमान
भर जाएगा गर्म उजाले से
तारा खो जाएगा

लेकिन
सांझ के बाद
जब थका हारा सूर्य सो जाएगा
उसे जगाने आएगा
भोर का यही तेजस्वी तारा ।

नदी

पहाड़ के
ऊबड़–खाबड़
टेढ़े–मेढ़े रास्ते
चीरती
ठहाके लगाती
गुनगुनाती राग में
बह रही हूं मैं

अलसाए बदन को
झकझोरती
स्तब्ध वन–प्रांतर को
स्वर देती
पक्षियों के कलरव में
भरती मिठास
मुस्कराती
खूब तपाती आग में
बह रही हूं मैं

अपनी कोरी जवान देह में
सदा अल्हड़ नग्न

न जाने कब से
सभ्यताओं की कालिमा को
उजास से भरती
पसीने—मिट्टी में सने
किसानों से
आलिंगनबद्ध होती
बीहड़ों से दहाड़ती
बह रही हूं मैं।

पोखर का कमल

पूरे पोखर में
बस एक था
नीला कमल

हरे पत्तों से ढके पानी में
सिर ऊंचा किए खड़ा था
नीली छतरी की तरह

कभी नहीं सोचा
नीला रंग
इतना खूबसूरत होता है
वह एक अजीब सनसनी
पैदा करता है
प्रेमियों की सांस में
बंधता है
नीला रंग
उनकी बाहों में सिमटता है
नीला रंग
किसी शास्त्रीय राग की तरह
पोखर के जल में

खिलता है नीला रंग

कांगड़ा कलम की नायिका के
ओठों को छूकर
बादलों से उभर कर
बरसता है नीला रंग
भर जाता है पोखर का आंगन
पत्तों पर उभरते हैं मोती
इन सबके बीच
उभर आता है नीला रंग
नील कमल में
जो डूब गया था उस दिन
पोखर का जल
कम हो जाने पर।

पेड़ के फल

मेरे घर के
आंगन में
थे पेड़
पेड़ पर थे पक्षी
उनके घर

फलते थे जब पेड़
हम खाते थे फल
तोड़–तोड़
पक्षी भी बैठते थे
डालों पर
वे भी खाते थे फल

पेड़ को यह सब देख
अच्छा लगता था
पक्षियों में
और
मनुष्यों में
समान थे
उसके फल ।

प्याज के छिलके

प्याज के छिलके उतारो
और उतारो
उतारते जाओ
पर
उसे एकदम नंगा मत करो
वह नहीं बचेगा।

अमरूद

कमरे में
मेज पर रखे थे
दो अमरूद
पूरे कमरे में फैला रहे थे
खुशबू
खुशबू में डूबा मन
बेहाल हो रहा था

आखिर उठा लिए मैंने
दो अमरूद
और खा गया
खाने के बाद
पता चला
खुशबू क्यों खत्म हुई !

गुब्बारे

ऊपर
आसमान में
उड़ते गुब्बारे देख
मेरे पैर
जमीन पर नहीं रहे !

सीढ़ियों पर

मैंने सीढ़ियां
ऐसे चढ़ीं
जैसे हों वे उम्मीदें
तेज रफ्तार से
पहली मंजिल पर
पहुंचकर सोचा
कहीं वे लौटा दें
मैंने रफ्तार
धीमी कर ली
उम्मीदें फिर बंधने लगीं
सीढ़ियों की तरह ।

हर समय खुली

उस खूसट बदरंग दुकान पर
बैठा है
बूढ़ा डोकरा
कांपते हैं उसके हाथ
ऐनक की कमानी में
धागे बांधे
उकड़ूं बैठा थूकता है
बार–बार बलगम
खांसते हुए
अपने चेहरे पर
बेशुमार झुर्रियां टटोलते हुए
याद करता है
अपने बाप–दादाओं को
जो कभी बैठा करते थे
इसी दुकान पर
यह चौथी पीढ़ी है उसकी
इस रौनक भरे बाजार में
एक यही दुकान है उदास

उसकी दुकान पर
लोग आकर चुपचाप
खड़े हो जाते हैं
अपने स्वजन के कफन का
सामान ले जाते हैं
कभी दरदाम नहीं करते
लोग
चुपचाप आते हैं
चुपचाप चले जाते हैं
मौत के सन्नाटे की तरह
बूढ़े डोकरे को
तन्हा छोड़कर

यह दुकान
हमेशा खुली रहती है ।

पिंजड़ा

कई रंगीन चिड़ियां
उसके कंधे पर
लट्ठे लगे पिंजड़ों में
कैद हैं
वे अब भी फुदक रही हैं
पिंजड़े के पतले तारों पर
ऊपर–नीचे कूदती
वे अब भी चहक रही हैं।

हम देखते हैं चिड़ियां
और याद करते हैं
गांव का खुला आकाश
आम्रकुंजों का बाग
नदी तट के घने पेड़
जहां स्वतंत्र हैं चिड़ियां
खुली हवा में उड़तीं
गातीं–नाचतीं
शहर में आकर
हो जाती हैं वे
पिंजड़ों में बंद

चिड़ीमार दिखाता है
एक–एक चिड़िया
उसका नाम बताता है
हँसता है हमारी नादानी पर
खरीदकर हम उड़ा देते हैं
एक चिड़िया
वह फिर हँसता है
आखिर कहां जाएगी उड़कर
लौट कर आएगी इसी पिंजड़े में

हम उदास आंखों से
खाली पिंजड़ा देखते हैं
वह खुर्राट आंखों से
आसमान पर हँसता है ।

सूरजमुखी

रोज
इस पहाड़ी से
उतरते वक्त
सूरज की पहली किरण के साथ
तुम धीरे से मुस्कराते हो
सूरजमुखी !
मैं अपना दिन
तुमसे शुरू करता हूं

मुझे घर के जंगले से
हाथ हिलाकर विदा देती
अपने अलसाए शरीर को तान
शाम जल्दी लौटने का निर्देश देती
मेरी पत्नी
सूरजमुखी !
मैं अपना प्रेम तुम्हें सौंपकर
चला जाता हूं

लौटने में देर हो ही जाती है
देखता हूं

तुम कार्निश पर निढाल हो
तुम्हारा इस तरह हारकर गिरना
मुझे दुखी कर देता है
मैं पत्नी को
आलिंगन में भरते वक्त
एक अज्ञात भय से कांप उठता हूं
सूरजमुखी !
तुम इतनी जल्दी क्यों थक जाते हो

शायद मेरी पत्नी
यह सच्चाई जानती है
इसलिए
मेरे सीने पर सिर रखकर
उदास आंखों से
देखने लगती है तुम्हें
सूरजमुखी, हमने
तुम्हारे साथ जीना सीख लिया है !

कागज की नावें

बचपन में हम
पुराने कागज इकट्ठा करते
सलवटें निकालते मोड़ते
कागज की नावें बनाते
पास के पोखर में जा
खाली नावें तैराते
वे हवा में डगमगातीं
थोड़ी दूर जाकर डूब जातीं
हम उदास हो जाते

अब समझ में आया
बिना वजन के
कागज की नावें क्यों नहीं तैरतीं !

पृथ्वी

बच्चों में भोलापन है
किशोरियों में अल्हड़पन है
सोतों में पानी है
पत्तों में हरा रंग है
खेतों में धान है
फूलों पर ओस है
पहाड़ों पर सर्द हवाएं हैं
गायों के थन में दूध है
बादलों में गड़गड़ाहट है
औरतों को गर्भ है
आदमी के शरीर पर पसीना है
इतनी सुंदर है पृथ्वी तो
यह गोल से चिपटी क्यों होती जा रही है ?

बंद दरवाजे

वे दरवाजे बंद थे
हमने अपने हाथों को
संभाला और
उन पर दस्तकें दीं
वे खुले और
हमें देखकर बंद हो गए
हम एक दरवाजे से
दूसरे दरवाजे तक
जाते रहे और
दस्तकें देते रहे
पर किसी ने दरवाजा नहीं खोला

हमने हार कर
महसूस किया
हमारे लिए
अब कोई दरवाजा नहीं खुलेगा
हमें लगा
हमें चारों तरफ से
बहुत भारी–भरकम चौड़ी दीवारों में
बंद कर दिया गया है

जहां से
किसी शब्द तक का गुजरना
मुश्किल है

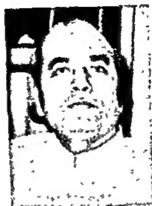
हमें इस तरह
दम घोंट कर की जा रही हत्या
स्वीकार नहीं हुई
हम विप्लवी बन गए
और ढूंढ़ने लगे
उन मोटी दीवारों की
ईंटों के जोड़
जहां से हम उन्हें
टोह सकें
ईंटें सरका दीवारें तोड़ सकें
निकलने का
रास्ता बना सकें
पहुंचने का
बंद दरवाजों के पार !

सन्नाटे का राग

सब कुछ मौन है
निस्तब्ध है
पहाड़
किसी गंभीर सन्नाटे में
डूबा है
कोई शब्द नहीं है पेड़ों पर
कोई आवाज नहीं है रास्तों पर
तालाब–नदी घाटों पर
इस घनीभूत नीरवता में
फिर भी आवाज
गूंज रही है वातावरण में
यह कोई उद्बोधन नहीं है
एक स्निग्ध राग है जो
तैर रहा है सन्नाटे पर
अकेलेपन में अपनापन भरते हुए।

मर्म

शब्द
कहां हैं शब्द
केवल ओठों की
कंपकंपाहट है
कोई फिक्र नहीं
वे जान ही लेंगे मर्म
अंदर छटपटाहट है !



मानिक बच्छावत

जन्म	:	11 नवंबर, 1938 (कलकत्ता)
शिक्षा	:	एम॰ ए॰ (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
कविता संग्रह	:	नीम की छांह (1960) एक टुकड़ा आदमी (1967) भीड़ का जन्म (1972) रेत की नदी (1987) एक टुकरो मानुष (बंगला)
गद्य	:	जुलूसों का शहर (1973) आदम सवार (1976)
अनुवाद	:	प्रतिद्वन्द्वी (सेरेडेन के 'राइवल्स' का हिंदी अनुवाद) विदेशी कविताओं के अनुवाद
अन्य लेखन	:	कला-समीक्षाएं
संपादन	:	मॉरीशस की हिंदी कविताएं (1970) 'अक्षर' कविता पत्रिका का संपादन (1965-1970)
यात्राएं	:	लगातार दक्षिण-पूर्व एशिया, अमेरिका, यूरोप एवं अन्य देश